ॐ Date

गुरुवार

# मातृशक्ती का महात्म्य

22/1/2009

सभी परमात्माओ को मेरा नमस्कार - - -

इस "स्त्री शक्ती के अनुष्ठान" मे मातृशक्तीयो का जागरण चल रहा है। मातृशक्ती वह है। जो के सकारात्मक शक्तीयो का ही प्रवाह है। जो सदैव समाज मे सकारात्मक शक्तीया प्रवाहित करने का कार्य करते आ रही है। और आज भी कर रही है। सकारात्मक शक्ती वह प्रथम अपने परिवार मे प्रवाहित करती है। और परीवार के माध्यम से समाज मे प्रवाहित करती है। प्रथम यह चैतन्य प्रवाह का आनंद पहले उसका परीवार लेता है। और फिर परीवार के माध्यम से सारा समाज लेता है।

प्रायः यह कहा जाता है, की पुरुष के हृदय के भितर जगह बनाने का मार्ग उसके पेट से से जाता है। पुरुष के पेट से आशय पुरुष के समाधान से है। याने पुरुष उस स्त्री से प्रभावीत होता है, जो स्त्री उसकी पेट पुजा करे याने उसे उस मार्ग से समाधान प्रदान करे। इस लिये वह पुरुष बुढा हो जाने के बाद भी अपने "माँ" के हाथ से बने पकवान या अपने "दादी" के हाथ के बने पकवान या अपनी "नानी" के हाथ की बनी सब्जीया भुला नही पाता है। ऐसा क्यो होता होगा क्या वास्तव मे वह बने पकवान उसको अच्छे लगे तो आपको भी अच्छे लगेंगे ऐसा आवश्यक नही है इस का कारण क्या है। इस का कारण यह है। उसकी माँ ने वह उसके लिये बनाये थे। उसकी दादी ने वह उसके लीये बनाये थे।

याने वह पकवान उन्होंने उसे चित्त मे रखकर बनाये थे. उनका उसके प्रती जो भाव था प्रेम था उससे वह बनाये थे, किसी पकवान का स्वाद उसी समय मालुम पडता है पर उस पकवान स्वाद अस्थाई होता है, लेकीन किसी पकवान के भाव का स्वाद हमे उस समय मालुम नही पडता है पर वह भाव का स्वाद स्थाई होता है, और वह पकवान खाते समय मालुम नही पडता है. पर बाद मे मालुम पडता है, क्योंकी वह स्थाई भाव का स्वाद है

महत्वपूर्ण वह पकवान या वह व्यंजन नही है महत्वपूर्ण है. वह भाव जिस भाव के साथ वह व्यंजन बना है व्यंजन बनाते समय पुरुष के प्रती जो भी भाव है वह भाव स्थाई हो जाता है उसका माध्यम व्यंजन बनता है याने व्यंजन का स्वाद स्थाई नही है व्यंजन बनाने वाला का भाव का स्वाद स्थाई है फिर वह उस पुरुष की स्त्री हो बहन हो भाभी हो या माँ हो दादी हो नानी हो कोई भी हो यह बनाने वाली स्त्री शक्ती कोई भी हो सकती है, इसीलीये शायद कहा गया है की पुरुष के हृदय का मार्ग उसके पेट से जाता है,

याने स्त्री शक्ती के पास मातृशक्ती का यह कमाल है, की वह अच्छे व्यंजन बना कर उसके द्वारा अपना स्थाई भाव किसी पुरुष मे बना सकती है यह भाव का कमाल तो शुद्ध चित्त पवीत्र चित्त के माध्यम से ही स्थापीत हो सकता है,

आप भोजन बनाते समय कीस स्थिती मे है स्थिती से आशय चित्त की स्थिती से है। आप का चित्त कौन स्थिती मे है

आप का उस पुरुष के प्रती भाव तो है पर आप अपना वह भाव प्रगट करने के स्थिती मे होना चाहिये, आप अपना भाव प्रगट करने की स्थिती मे तब होगी जब आप शुन्य की स्थिती मे होगी. आप जब शुन्य की स्थिती मे होगी तभी आप अपना शुद्ध भाव व्यंजन मे प्रवाहीत कर सकोगी व्यंजन तो एक माध्यम मात्र है, महत्वपुर्ण है, आप का पवीत्र शुद्ध भाव वही महत्वपुर्ण है।
इस प्रकार से पाकशास्त्र वह शास्त्र है, जो आपको दुसरो के ह्रदय तक जाने का मार्ग दिखा सकता है, आजकल कामकाज के कारण अपनी व्यस्तता के कारण इस अमोघ अस्त्र से और इसके ज्ञान से विमुख हो रही है कई कामकाजी स्त्रीया ऐसी भी होती है, जो भोजनशाला का कार्य छोडकर तब कर सकती बाद भोजनशाला का कार्य नही आता मुझे तब ऐसा लगता है की ऐसा भी नही है की आज की आधुनीक नारी चौके और चुल्हे की ही होकर रह जाये. पर इतना अवश्य है दुसरो के ह्रदय मे पहुचने का एक मार्ग वह खो रही है जो भाव के द्वारा हो सकता है वह प्रभाव स्थाई स्वरुप का होगा तो ऐसा स्थाई प्रभाव छोडने से आप चुक रही है
इस लिये इस शास्त्र मे रुची ले और अपने भाव को दुसरो के ह्रदय मे स्थाई करे इससे एक ओर आप आपका स्थाई प्रभाव बना रही है और दुसरी ओर आप आपकी मातृत्व शक्ती को अपनी देने की शक्ती को विकसीत कर रही है और भाव की शक्ती तो परमात्मा की शक्ती है आप जितनी बांटोगी इतनी ही वह बढेगी।

(5) Date

आप आपके जिवन यह अनुभव कर के देख लो क्योंकी मैं स्वंयम अनुभव कर के बता रहा हु, और यही गुरुमंत्र फीर आप आपकी लडकी को भी दो ताकी वह भी अपने सासुराल मे जा कर दुसरो के ह्रदय मे स्थाई भाव निर्माण कर सके. आप स्वंयम अनुभव करो की आप को किसी का भी दिल जीतना है तो अच्छे भाव के साथ व्यंजन बना कर उसे खिलाओ वह आप के गुण गायेगा और खड्डूस होगा तो गुण नही गायेगा लेकीन आप के लिये बुरा सोचना तो बंद कर देगा।,

यह कमाल है पाकशास्त्र का यह एक प्रकार का ब्रम्हास्त्र है जो कभी खाली नही जाता है मैंने अनुभव कीया अब आप भी अनुभव कर देखो. अधीक क्या लिखु आप अनुभव कर के खुद ही समझ जाओगी, आप सभी को खुब खुब आशिर्वाद

आपका
[signature]
22/1/2009